i;koj.kh; f'k{kk rFkk i;koj.k lqj{k.k gsrq ljdkjh iz;kl

Jherh 'kkHkuk f=ikBh
प्रवक्ता, बी.एड.
ज्योति कालेज ऑफ मैनेजमेण्ट
साइन्स एण्ड टेक्नॉलाजी, बरेली
(उत्तर प्रदेश)

कहते हैं स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। परन्तु आज के युग में प्रत्येक मनुष्य अनेक बीमारियों से घिरा हुआ है। अनेक ऐसी भी बीमारियाँ हैं जिन्हें सुनते ही हम घबरा जाते हैं। इन बीमारियों की जड़ में है हमारा दूशित पर्यावरण। आज हम शुद्ध वायु के लिये परेशान हो रहे हैं परन्तु स्वच्छ वायु भी एक स्वप्न प्रतीत हो रही है। शुद्ध वायु, शुद्ध जल सभी कुछ प्राप्त करना दुष्कर होता जा रहा है। आज दुनिया के सारे देश प्रगति की दौड़ में अग्रेसर ही रहना चाहते हैं। आधुनिक युग में विज्ञान हमें नये–नये यन्त्र–संयंत्र दे रहा है। वहीं दूसरी तरफ इसका दुष्परिणाम भी हमारे पृथ्वी निवासियों को झेलना पड़ रहा है। हमारी वसुन्धरा अपने अन्दर अनेक रत्नों को संजोये है परन्तु मनुष्य उनका दुरूपयोग करता चला जा रहा है तथा स्वयं को संकट में डाले ले रहा है।

आधुनिकता का अनुकरण करते–करते हम प्रकृति से दूर होते चले गये हैं तथा सामान्य जीवन त्यागकर कृत्रिम जीवन व्यतित करने लगे हैं। जबकि ^:lk* जैसे हमारे प्रकृतिवादी दाशर्निक तक ने कहा है ^^Ádfr dh vksj ykSVksA** यदि हम अपने अतीत पर दृष्टिपात करें तो देखेंगे कि उस समय का जन–जीवन आधुनिक युग से कहीं सुरक्षित तथा स्वस्थ था। कारण मनुष्य आधुनिकता का अन्धानुकरण नहीं कर रहा था प्रत्येक व्यक्ति का यह प्रयास रहता था कि किस प्रकार शुद्ध वायु, प्रकाश तथा शुद्ध जल प्राप्त हो सके। इसके लिए वे प्रयासरत रहते थे। जैसे शुद्ध वायु में घूमना, आधुनिक यंत्रों का न होना।

आज हम देखते हैं कि स्थान–स्थान पर मिलें तथा फैक्ट्री लग रही हैं। एक ओर जहाँ इनसे जनता को रोजगार मिल रहा है वहीं दूसरी ओर इनसे निकलने वाला धुआ हमारे साफ–सुथरे वातावरण को प्रदूषित कर रहा है। जिसका परिणाम श्वास से सम्बन्धित तथा अन्य अनेक बीमारियों के रूप में हमें झेलना पड़ रहा है। आज व्यक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान जाने के लिए जिन वाहनों का प्रयोग कर रहा है उनसे सुविधा तो अव य होती है परन्तु हानि भी हो रही है। जैसे उनसे निकलने वाला धुआ अन्दर ही अन्दर हमें खोखला करता जा रहा है।

इतने बड़े स्तर पर पर्यावरण को असंतुलित होता देख सम्पूर्ण विश्व को इसके संरक्षण की आवश्यकता महसूस हुई। जब विश्व ने यह देखा कि ओजोन परत में ही छिद्र होता जा रहा है

जो कि ^Xykscy okfeZax* का एक बड़ा कारण है तथा कैंसर, त्वचा से सम्बन्धित बीमारियाँ भी इससे तीव्रता से फैल रही है। तो सम्पूर्ण विश्व इसको संरक्षित करने के उपाय में लग गया। इसके लिए समय–समय पर विश्व में अनेक अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किये गये।

1972 esa LVkWd gkse पर्यावरण पर प्रथम अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें भाग लेने वाले सभी देश इस बात पर एकमत हुए कि पर्यावरण को संरक्षित करना मनुष्य की मूल आवश्यकता है। उसी प्रकार जैसे भोजन करना, जल ग्रहण करना मनुश्य की प्राथमिक आवश्यकताएँ हैं। इसके पश्चात् 1992 esa fj;ks Ms tusjks czkthy esa ^i`Foh f'k[kj lEesyu* esa lEesyu vk;kftr gqvk जिसमें मौसम में होने वाले परिवर्तन, पृथ्वी पर पशु पक्षियों, मनुष्यों का जीवन संकट में पड़ने से बचाने से सम्बन्धित मुद्दों पर चर्चा हुई।

देश–विदेश में पर्यावरण उन्मूलन या पर्यावरण सन्तुलन से सम्बन्धित अनेक चर्चायें हो चुकी हैं परन्तु एक ठोस परिणाम जो कि वास्तव में पर्यावरण को सुरक्षित रखे अभी नहीं मिल सका है। व्यक्ति के स्वयं जागरूक होने से ही हमें इसके अच्छे परिणाम मिल सकते हैं। जब तक प्रत्येक देश का प्रत्येक नागरिक अपने पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए स्वयं कदम नहीं उठायेगा तब तक राष्ट्र की सरकारों को कोई भी योजना बनाने में सफलता नहीं मिल सकेगी।

हमारा पर्यावरण शब्द हिन्दी के दो शब्दों से मिलकर बना है। izFke 'kCn ^ifj* gS rFkk f}rh; 'kCn gS ^vkoj.k*A परि का अर्थ चारों ओर से लगाने से है। आवरण का अर्थ होता है 'घेरा'। अर्थात् जो चारों आरे से घिरा हो वही अंग्रेजी में इसे 'Environment' कहते हैं जो फ्रेन्च भाब्द 'Environ' से उद्भूत हुआ है जिसका अर्थ है 'Surrounding of an object' 'आस–पास का आवरण'। इस प्रकार इसका अर्थ निकाला जा सकता है उन सभी वाह्य परिस्थितियाँ तथा प्रभावों का योग जो जीव के जीवन एवं उसके विकास पर प्रभाव डालते हैं। अर्थात् जीव का रहन–सहन बाहरी कारकों के प्रभाव के कारण प्रभावित होना।

हमारे देश के पर्यावरण संरक्षण अधिनियम tks fd 1986 esa cuk dh /kkjk&2¼d½ ds vuqlkj ''पर्यावरण में वायु, जल एवं भूमि तथा परस्पर सम्बन्ध सम्मिलित हैं जो जीवित प्राणियों, पेड़ पौधे, सूक्ष्म जीव एवं सम्पत्ति के मध्य विद्यमान है।'' भारतीय धर्म ग्रन्थों में भी इस शरीर को पंचतत्त्वों से निर्मित बताया गया है जो हैं –

^^fNfr ty ikod xxu lehjk iap jfpr ;g v/ke ljhjkA**

इन्हीं पंचतत्त्वों से कर्मेन्द्रियों तथा ज्ञानेन्द्रियों का निर्माण होना बताते हैं जो कि पर्यावरण से पूरी तरह सम्बन्धित हैं। पर्यावरण पर विदेशी पर्यावरणविद gllZdksfoglks ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया है ^^i;kZoj.k mu lc ckgjh n'kkvksa ,oa iHkkoksa dk ;ksx gS tks Ák.kh ds thou rFkk fodkl dks iHkkfor djrs gSaA^^

f'k{kk 'kCndks"k ने इसके अर्थ को कुछ इस तरह बताया है –

''पर्यावरण समस्त वस्तुओं, शक्तियों तथा दशाओं से अभिहित एक सामान्य पद है जो ऐसे उद्दीपक के माध्यम से व्यक्ति को प्रभावित करता है जैसे वह प्राप्त करने योग्य है।''

आज विश्व के विकासशील देश विकसित देशों की राह पर चल पड़े हैं। कोई भी राष्ट्र विकसित तब होगा जब उसके पास संसाधन होंगे तथा यह औद्योगिक संसाधन प्रदूषण को जन्म देने का कार्य करते हैं। कारखानों की अवशिष्ट सामग्री, नगरों से आने वाला गन्दा जल, ताप बिजली घरों की चिमनियों से निकलने वाला विशैला धुआ, अधिक मात्रा में होने वाला ध्वनि प्रदूषण, यह प्रदूषण के प्रमुख जन्मदाता हैं यदि जीवन को संकटमुक्त बनाना है तो इन्हें समाप्त करने के उपाय ढूँढने ही होंगे। इसे दूर करने के लिए हमारे देश की ही नहीं सम्पूर्ण विश्व की प्रमुख संस्थाएँ पूरे मन से लगी हैं। जिनमें कुछ संस्थाएँ जो कि dUoUku vkWu bUVju'kuy V'M] buok;jueUVy ÁkVD'ku ,tUlh] ;jkfi;u bdkukfed dE;fuVh] bUVju'kuy ;fu;u Qkj dUtoj'ku vkQ upj ,UM upjy fjlkl t] bUVju'kuy ejhu ;ukbVM u'kUl] buok;jeUV Ákxke ¼;ui½ 1972] oYM dfe'ku vku buok;jueUV ,UM Moyieu'V 1983 आदि अन्तरराष्ट्रीय संस्थाओं ने पर्यावरण के विविध क्षेत्रों में विशेष कार्य करके विश्व पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं का हल ढूँढने का प्रयास किया है।

हमारे देश में भी पर्यावरण से सम्बन्धित अनेक योजनाएँ बनायी गयी हैं तथा अनेक प्रयास भी किये जा रहे हैं जिसमें Hkkjr ljdkj us 1980 es i;kZoj.k foHkkx dh LFkkiuk dhA जिसमें igys [k.M es xxk ,D'ku Iykus g जिसमें मुख्य रूप से हमारी नदियों के दूशित जल को स्वच्छ करना उद्दे य है। दूसरे प्रकार में तेईस विभाग हैं जिनमें – lUV'y ikY;'ku dV'ky ckM] buok;jueUVy fjlp] buok;jueUVy ,T;d'ku lfEefyr gA कहते हैं मनुष्य अपना हन्ता स्वयं है परन्तु अब समय आ गया है जबकि पर्यावरण को बचाना होगा नही तो हमारी पृथ्वी ही समाप्त हो जायेगी। पृथ्वी पर जीवन असम्भव हो जायेगा। अन्तर्राश्ट्रीय संघ द्वारा आयोजित स्कूल पाठ्यक्रम के लिये पर्यावरणीय शिक्षा पर vUrjjk"Vh; cBd dh fjikVZ ¼1970½ में पर्यावरणीय शिक्षा को इस तरह बताया गया है – ^^i;kZoj.kh; f'k{kk eu"; dh ijLij lEc)rk mldh le>us rFkk mldh tho HkkSfrd ifjos'k dks le>us rFkk vo/kkj.k djus ds fy;s vko';d dk'kyks rFkk vfHko`fŸk;ksa ds fodkl dh fn'kk esa eY;ksa dks igpkuus rFkk fopkjksa dks Li"V djus dh ÁfØ;k gSA**परन्तु इस सबके होते हुए भी भारत में पर्यावरण का संरक्षण सन्तोशजनक रूप से नहीं किया जा सकता है। भारत सरकार ने 1972 में पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित nks la'kks/ku किये हैं ftles vuqPNsn 48**A** es g ^^jkT; ns'k ds oukas ,oa oU; thoksa dh lqj{kk ds fy;s i;kZoj.k ds lqj{k.k rFkk lao/kZu dk iz;kl djsxkA**

इसमें देश के प्रत्येक राज्यों को ऐसे कानून बनाने होंगे जिससे वनों को काटने से बचाया जा सके। आज वनों के समाप्त होने से शुद्ध वायु मिलना बन्द हो गयी है तथा वन्य जीवों को

उनकी खाल, दाँत से सामान बनाने के कारण समाप्त किया जा रहा है जिसके कारण पर्यावरण असन्तुलन की स्थिति पैदा हो गयी है। अतः प्रत्येक राज्य का कर्तव्य इसका संरक्षण करना है।

vuqPNsn 51**A(g)** ''भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह प्राकृतिक पर्यावरण का संरक्षण एवं संवर्धन करें जिसमें वन, झीलें, नदियाँ तथा वन्य जीव सम्मिलित हैं तथा जीवधारी के प्रति दयाभाव रखें।'' यह अनुच्छेद बताता है वनों के कटान पर रोक, झीलों तथा नदियों के स्वच्छ जल तथा पशुवध पर रोक होनी चाहिए तभी स्वस्थ पर्यावरण विकसित हो सकेगा। हमारे देश में समय–समय पर अनेक गोष्ठियों (seminars) का आयोजन पर्यावरण संरक्षण के लिए होता रहा है।

igyh xks"Bh dk vk;kstu 16 ekpZ] 1983 ubZ fnYyh esa **IEEP** rFkk **NCERT** ds lg;ksx ls gqvkA 11 ls 15 Qjojh] 1985 ds e/; ubZ fnYyh esa **IEEP** rFkk **NIEP** dh la;qDr cSBd gqbZ जिसने पाठ्यक्रम निर्माण में पर्यावरण शिक्षा सम्मिलित की जानी चाहिए तथा शिक्षकों के प्रशिक्षण में भी पर्यावरण को विशेश महत्त्व दिया जाना चाहिए। भारत सरकार ने इसे स्वीकार करा तथा सभी राज्यों को यह निर्देश दिया है कि वे अपने यहाँ इसे लागू कर दें। भारत में केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारों ने पर्यावरण के संरक्षण के लिए अनेक उपाय किये हैं। उनकी ओर से अनेक योजनाएँ भी बनायी गयी। ,d jk"Vªh; catj fodkl cksMZ dh LFkkiuk 1985 esa dh x;hA जिसमें बंजर भूमि को उपजाऊ बनाकर वृक्ष लगाने की योजना बनाई गयी जिससे गाँवों में बंजर भूमि का विकास हो सके। इसी योजना के समान ही 1985 esa iatkEHk dh x;h xaxk dk;Z ;kstuk जिसमें गंगा का पानी स्वच्छ रखने के लिए अनेक उपाय बताये गये हैं। हमारे देश में गंगा को देवी मानकर पूजा की जाती है जिसके कारण पूजा से सम्बन्धित सामग्री उसमें प्रवाहित की जाती है। वो सामग्री सफाई के अभाव में सड़ती जाती है तथा पानी को दूषित कर देती है।

मुख्यतः प्रदूषण तीन प्रकार से हमारे जीवन को हानि पहुँचाते हैं जिनमें प्रथम है जल को प्रदूषित करके। नदियों में पूजा से सम्बन्धित सामग्री प्रवाहित करने से, नदियों में स्नानादि करने से नदियों का जल दूषित होता है तथा घरों में वही जल पीने के काम आता है तब अनेक बीमारियाँ अपने साथ ले आता है। आज जहाँ हम आधुनिकता की ओर बढ़ रहे हैं वहीं छोटे तथा लघु उद्योगों का स्थान बड़े उद्योगों ने ले लिया है। उनसे निकलने वाला धुआ वायु में मिलकर जहरीली गैसों को जन्म दे रहा है। जो कि हमारे शरीर में जाकर श्वास से सम्बन्धित अनेक बीमारियाँ पैदा करती हैं। यद्यपि राज्य सरकारों ने ध्वनि से सम्बन्धित यन्त्रों के प्रयोग का समय तो निर्धारित कर दिया है परन्तु एक निश्चित समय पर चलते हुए भी यह हमारे कानों को प्रभावित करती है।

इन प्रदूषणों को ध्यान में रखते हुए इसे नियंत्रित करने के लिए प्रदूषण नियंत्रण कानूनों का निर्माण i;kZoj.k laj{k.k vf/kfu;e 1986 esa ÁkjEHk fd;k x;kA इसके लिए पर्यावरण एवं वन मंत्रालय वित्तीय सहायता भी प्रदान कर रहा है। यदि हम वनों को बचायेंगे तो ही वन्य जीवों को भी सुरक्षित रख पायेंगे। इसके लिए भी gekjh ljdkj us 1988 esa jk"Vªh; ou rFkk oU; thou lEcU/kh uhfr dk fuekZ.k fd;kA पर्यावरण को भुद्ध रखने में पहाड़ी क्षेत्रों का विशेष हाथ रहा है। जहाँ पर शुद्ध वायु तथा वनों का क्षेत्र हम देख सकते हैं। अब उन क्षेत्रों को वैसे ही सुरक्षित कैसे रखा जाये ताकि हम ताजी हवा में सास ले सकें इसके लिये vYeksM+k esa 1988 esa xksfoUn cYyHk iUr fgeky; i;kZoj.k ,oa fodkl laLFkku* की स्थापना की गयी।

वाहनों से निकलने वाले पेट्रोल से अनेक जहरीली गैसें हमारी सॉस द्वारा भारीर में प्रवे ा कर जाती हैं। अतः इसे रोकने के लिए केन्द्र सरकार ने gfjr bZa/ku ;kstuk 1 vÁSy] 1995 esa pykbZA जिसमें दिल्ली, बम्बई, कोलकाता, चेन्नई में सीसा रहित पेट्रोल अनिवार्य किया गया। धीरे–धीरे हम इस क्षेत्र में जागरूक हुए तथा इसे पूरे देश में लाने का प्रयास किया गया। इसे ग्रीन फ्यूल स्कीम कहा गया।

यद्यपि पर्यावरण बचाने के लिए अनेक प्रयास किये जा रहे हैं। भारत सरकार तो इसे प्रोत्साहित करने के लिए इस क्षेत्र में फैलोशिप भी दे रही है। 1995 में केन्द्र सरकार ने ही राष्ट्रीय पर्यावरण फेलोशिप की स्थापना भी की। इन बनायी गयी योजनाओं पर हम वास्तविक रूप से जब अमल करेंगे तभी यह योजनाएं सक्रिय हो सकती हैं। अपने जीवन को सुरक्षित रखना हमारा परम कर्तव्य है तथा इसका प्रयास करना भी हमारे ही हाथ में है। मनुष्य स्वयं अपना तथा प्रकृति का विनाश करता जा रहा है। वह स्वयं अपने साथ खेल कर रहा है। इस बात से अनजान रहते हुए कि एक तरफ वह प्रगति के पथ पर तो अग्रसर हो रहा है वहीं दूसरी तरफ प्रकृति से भी दूर होता चला जा रहा है। प्रकृतिवादी दार्शनिक :lks ने कहा है –^^Ádf̀r euq"; dh f'kf{kdk gS] og vPNk dk;Z djus ij mls iqjLd`r djrh gS rFkk xyr dk;Z djus ij n.Mr Hkh djrhA**

पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए कुछ उपाय करने की आवश्यकता है। पर्यावरण शिक्षा को विद्यालय पाठ्यक्रम में स्वतंत्र विशय के रूप में अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाये जो आज सभी कक्षाओं में लागू हो चुका है। पर्यावरण का संरक्षण हम तब कर सकते हैं जब छोटे बच्चों से लेकर वृद्धों सभी को जागरूक करें। पर्यावरण की शिक्षा देने के लिए भ्रमण करना आवश्यक है तथा रेडियो तथा दूरदर्शन के माध्यम से एवं समाचार पत्रों में लेख प्रकाशित करना आवश्यक है। पर्यावरण को बचाने के लिए पोस्टर लगाये जायें, नुक्कड़ नाटक हों तथा रैलियँ निकाली जायें।

पर्यावरण संरक्षण के लिए हम बहुत कुछ कर रहे हैं तथा हमें बहुत कुछ करना बाकी है। यदि हम इस ओर अपना ध्यान केन्द्रित नहीं करेंगे और यह सोचेंगे कि हमें किसी भी तरह प्रगति

करना है तो शायद पर्यावरण सुरक्षित नहीं रख पायेंगे। प्रगति तो प्रत्येक मनुष्य के जीवन का अधार है परन्तु उसके पीछे छिपे घातक परिणाम को भी हमें ध्यान में रखना है। ऐसे आगे बढ़ना है जिससे हमें तथा अन्य प्राणियों को नुकसान न हो नहीं तो हमारा साँस लेना कठिन हो जायेगा। हमारी पृथ्वी को प्राचीन काल से ही धरती माँ की उपाधि दी गयी है जो अपने ऊपर सभी का भार समेटे हैं। अतः हमारा भी उसके प्रति कुछ कर्तव्य है। वह है उसकी रक्षा करना कहा भी गया है – ^tuuh tUe Hkfe'p Loxkfnfi; xjh;lhA*

हमारी जन्मभूमि की सुरक्षा पर्यावरण संतुलन द्वारा ही हो सकती है। यदि पर्यावरण संतुलन रहा तो मनुष्य का अस्तित्व भी रहेगा तथा वह अपनी तथा समाज का विकास कर सकेगा।

lUnHkZxzUFk

1. गोयल, एम.के. (1995). अपना पर्यावरण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. Jeffers, J.N.R. (1973). System modling and analysis in resource management. Journal of Environmental Management. Vol. I.
3. Kumar, V.K. (1982). A study in Environmental Pollution. Ford Book Agency, Varanasi.
4. Pal, B.P. (1981). National Policy on Environment Deptt. Of Environment Government of India, New Delhi.
5. Pal, S.K. (1994). Environment trend and thoughts in education, published by Innovative Research Association, Allahabad.
6. Sharma, P.D. (1990). Ecology and Environment, Rastogi Publishers, Meerut (U.P.)
7. Sharma, R.A. (1993). Advanced Education Technology, Meerut.
8. Singh, S. (1995). Environmental Geography, Prayag Pustak Bhawan, Allahabad.